सादर प्रकाशनार्थ –
संदर्भ :– महाराणा प्रताप जन्म जयन्ती पर विशेष।
11 जून 2013

'महाराणा प्रताप और जैन धर्म'

– डॉ. दिलीप धींग

मेवाड़ प्रारम्भ से ही जैन धर्म की गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र रहा है। वीर शिरोमणी महाराणा प्रताप (1540 – 1597) के समय में भी मेवाड़ में जैन धर्म का व्यापक प्रभाव था। इतिहास प्रसिद्ध दानवीर श्रावक भामाशाह कावडिया (जैन) प्रताप के बालसखा थे। दानवीर भामाशाह का सम्पूर्ण जीवन जैन धर्म क उच्चादर्षों से अनुप्राणित था। प्रताप के जीवन पर उनके परम सहयोगी दानवीर भामाशाह का प्रभाव होना स्वाभाविक है। प्रताप के मन में जैन धर्म और उसकी मान्यताओं के प्रति भी आस्था थी। प्रताप के जीवन के कुछ प्रसंग और पहलू जैन धर्म के प्रति उनके प्रेम को अभिव्यक्त करते हैं। महाराणा प्रताप जैन मुनियों का बहुत आदर करते थे। 'मंत्र दिवाकर' ग्रन्थ में लिखा है कि एक जैन मुनि की प्रेरणा से महाराणा प्रताप ने संकट के समय में भगवान् पार्श्वनाथ की उपासना की थी और वे संकट मुक्त हुए थे। जैनाचार्य हीरविजय सूरि और उनके शिष्यों के प्रति प्रताप के मन में बहुत श्रद्धा थी। जब कभी तपागच्छ के साधु – साध्वियों का उदयपुर आगमन होता था तो प्रताप उन्हें सामने लेने जाते थे। तपागच्छ के पट्टधर (शीतलनाथ उपाश्रय के पूज्यश्री) का जब उदयपुर आगमन होता था तो तेलियों की सराय (वर्तमान में बी.एन. कॉलेज) तक महाराण प्रताप उनकी आगवानी के लिए जाते थे। मुनि कल्याणविजय द्वारा लिखित तपागच्छ पट्टावली के अनुसार विक्रम संवत् 1635 की आश्श्वन शुक्ला पंचमी गुरुवार के दिन प्रताप ने जैनाचार्य हीरविजय को मेवाड़ पधारने के लिए विनती पत्र लिखा था। आचार्य हस्ती प्रणीत 'जैन धर्म का मौलिक इतिहास' के चतुर्थ भाग में भी उक्त पत्र प्रकाशित किया गया है। पत्र में महाराणा प्रताप ने लिखा है कि अकबर को प्रतिबोध देकर जीवहिंसा रुकवाकर आचार्य ने बड़ा उपकार किया है। अहिंसा धर्म का ऐसा उद्योत सर्वत्र होना चाहिये। प्रताप के समय में ही उनके प्रधानमंत्री दानवीर भामाशाह काविड़या ने विक्रम संवत् 1643 माघ सुदी 13 को केशरियाजी जैन मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया था। प्रताप के पुत्र व उत्तराधिकारी राणा अमरसिंह ने विजयरत्नसूरि के उपदेश से पर्यूषण पर्व के दिनों में हिंसा नहीं करने (अगता पालने) का पट्टा जारी किया था। स्व. बिरधीलाल सेठी (जयपुर) तथा जशकरण डागा (टोंक) ने उनकी शाकाहारी विषयक पुस्तकों मे महाराणा प्रताप को पूर्ण शाकाहारी बताया है। स्वतंत्रता और स्वाभिमान की रक्षा के लिए लम्बे समय तक प्रताप जंगलों में रहे। उनके लिए यह प्रसिद्ध है कि संघर्षकाल में जंगलों में उन्होनें घास (घास के बीज या वन्य अनाज) की रोटियां खाई। उन्हें फलघर व तृणधर कहा गया। पुष्करवाणी ग्रुप ने इतिहास से जानकारी लेते हुए बताता है कि पद्यश्री कवि कन्हैयालाल सेठिया की पंक्तियां 'अरे, घास री रोटी ही..' भी प्रताप के शाकाहारी जीवन की ओर संकेत है। शक्ति और शौर्य के धनी प्रताप को इतिहासकारों ने धर्मानुरागी भी बताया है। यह तो स्पष्ट है कि बाल्यावस्था से ही प्रताप को जैन धर्म का सामीप्य और सान्निध्य मिला। प्रताप के जीवन की अनेक विशिष्टताएं जैन धर्म के सिद्धान्तों की फलश्रुति लगती है। 'जैन धर्म और महाराणा प्रताप' विषय पर यदि शोध हो तो कई तथ्य मिल सकते है।